जन्मः 14 फरवरी, 1933

निधनः 23 फरवरी, 1969

मधुबाला के गुजरने के सालों-साल बाद भी उनकी सुंदरता की चर्चा आज भी की जाती है। मधुबाला से लेकर ऐश्वर्या राय तक एक भी तारिका मधुबाला जैसी सर्वांग सम्पूर्ण सुन्दरी नहीं आई।

मधुबाला का पहली बार दिल धड़का प्रेमनाथ के लिए, लेकिन बीच में आ गए दिलीप कुमार। दोस्ती की खातिर प्रेमनाथ ने बीना रॉय से शादी कर ली। दिलीप से प्यार में टूट चुकी मधुबाला को दिल का रोग हो गया और दिल फेल होकर ही उन्हें साथ ले गया।

रजतपट की वीनस

मधुबाला

वह प्रेम दिवस था। 14 फरवरी, 1933 । गोरी चिट्टी दिल्ली के पठान अताउल्लाह खान के यहाँ तीसरी बेटी ने जन्म लिया। सुकोमल बिटिया का नाम रखा गया – मुमताज जहाँ। पेशावर (पाकिस्तान) के रहने वाले गर्ममिजाज पठान अताउल्लाह खान सरकारी नौकरी के कारण दिल्ली में बसे हुए थे। सरकारी तनख्वाह तीन बच्चियों के पिता को पर्याप्त नहीं लग रही थी। एक दिन किसी काम से बम्बई आए तो नन्हीं मुमताज छः साल की भी साथ थी। वह पुराना सागर स्टूडियो दिखानें ले गये। स्टूडियो का रंग-बिरंगा वातावरण नन्हीं आँखो का आकर्षण बन गया। दिल्ली आकर नृत्य और संगीत को आत्मसात करने का मन बनाया। इस कौशल का आरम्भिक सुफल यह रहा कि दिल्ली आकाशवाणी में अवसर मिल गया। उस समय आकाशवाणी में बच्चों के कार्यक्रम संगीतकार खुर्शीद अनवर ('निशाना' और 'सिंगार') प्रस्तुत करते थे। किसी काम से संगीतकार मदनमोहन के पिता रायबहादुर चुन्नीलाल भी दिल्ली आए। बच्चों के कार्यक्रम में दमकती अप्सरा – सी मुमताज ने उन्हें प्रभावित किया।

अपनी कई फिल्में मधुबाला ने बुर्का पहनकर थिएटर में देखी और आहें भरते जवाँ दिल बुज़ुर्गों के मजे लिए।

किशोर कुमार मधुबाला को 'बंदरिया' कहते थे, क्योंकि मधुबाला उनकी दूसरी पत्नी थी और सभी पत्नियाँ 'बांद्रा' में रहा करती थी। संयोग से उनकी चौथी पत्नी भी 'बांद्रा' से ही है।

हॉलीवुड के निर्देशक फ्रेंक काप्रा ने मधुबाला को हॉलीवुड का न्यौता दिया, तो उन्होंने यह कहकर ठुकरा दिया कि वह छुरी-काँटे से नहीं खा सकती।

फिल्मी नायिकाओं में सिर्फ मधुबाला और नरगिस ही ऐसी थी, जो काज़ल लगाना पसंद नहीं करती थीं।

किशोर कुमार ने मधुबाला के इलाज पर दस हजार रुपये प्रतिदिन तक खर्च किए थे।

फिल्म 'मुगल-ए-आजम' के गीत 'प्यार किया तो डरना क्या' के नृत्य के लिए मधुबाला ने लगातार दो वर्ष तक अभ्यास किया। शूटिंग के समय प्रेस पर बंदिश लगाने का काम सबसे पहले मधुबाला ने किया था।

वह बोम्बे टॉकिज के जनरल मेनेजर थे और तब बोम्बे टॉकिज में 'बसंत' फिल्म की तैयारी चल रही थी। अभिनेता उल्हास और मुमताज शांति अभिनीत इस फिल्म के लिए एक छोटी-सी लडकी की तलाश थी। उन्होंने मुमताज को मालकिन देविका रानी ने मुमताज का चयन कर लिया एक सौ पचास रूपये महीनें पर मुमताज ने फिल्म 'बसंत' में एक ऐसी बालिका का किरदार निभाया, जो अपने अलग हुए माता – पिता को करीब लाने का काम करती है। फिल्म का गाना 'मेरे छोटे-से मन में छोटी-सी दुनियां' उन दिनों खासा लोकप्रिय हुआ। फिल्म 'बसंत' के पश्चात उन्हें नोटिस मिल गया और मुमताज फिर दिल्ली लौट आई। तीन वर्ष बाद बॉम्बे टॉकिज से फिर बुलावा आया फिल्म 'ज्वार भाटा' के लिए। तीन सौ रुपये महिनें पर मिली इस फिल्म के साथ कुछ परेशानियाँ भी चली आईं। अताउल्लाह खान की नौकरी जाती रही। एक दिन अताउल्लाह खान सपरीवार फिल्म देखनें गए। लौट कर देखा तो उनके मोहल्ले में विस्फोट हो गया। वह सड़क पर आ गए। बॉम्बे टॉकिज ने हाथ खड़े कर दिए। इस बीच 'ज्वार-भाटा' भी हाथ से निकल गई।

अब अताउल्लाह खान पूरी तरह मुमताज पर आश्रित हो गए। वह उसे लेकर निर्देशकों – निर्माताओं के दरवाजे पहुँचे। रणजीत स्टूडियो के लकी हीरो मोतीलाल से परिचय काम आया। यहाँ बेबी मुमताज से पुछा गया – 'गाना आता है?' प्रखर आत्मविश्वास से जवाब आया – 'हाँ, आता है।' गाना शुरू हुआ। मुमताज ने गाना अचानक बन्द कर दिया। संगीत साथियों को लगा, वाद्य वृन्द देखकर घबरा गई। मुमताज घबराई नहीं थी। असल में तबला और मुमताज की ताल नहीं मिल रही थी। तबलची परेशान था। मुमताज ने उसे डांट कर कहा - 'मैं जैसा गाती हूँ, वैसी ताल मिलाना पड़ेगी। तुम्हारे तबले के साथ मैं थोड़े ही ताल बैठाऊँगी।' मुमताज की बेबाकी से सब हैरान रह गए। तीन सौ रूपये महिनें पर रणजीत स्टूडियो में काम मिल गया। फिर तो धन्ना भगत, पुजारी, फुलवारी, मुमताज महल उर्फ मुमताज, राजपुतानी फिल्मों में बेबी मुमताज ने अभिनय कौशल प्रस्तुत किया। फिल्म 'धन्ना भगत' और 'पुजारी' के लिए उन्होंने गाया भी। इस तरह बेबी मुमताज के रुप में मधुबाला के अभिनय की पहली पारी शुरू हुई।

फिल्म 'मुगल-ए-आजम' के रोमांटिक सीन काफी गहराई और नजदीकियों के साथ फिल्माए गए हैं, लेकिन यह अचरज की बात है कि शूटिंग के दौरान दिलीप मधुबाला ने कोई बात तक नहीं की थी।

मधुबाला और मीनाकुमारी दोनों ने करियर की शुरूआत बेबी मुमताज के रूप में की थी। दोनों सच्चे प्यार के लिये जिंदगी भर तरसती रहीं। दोनों बगैर माँ बने गुजर गईं।

'चलती का नाम गाड़ी' फिल्म में मधुबाला पर गाना फिल्माया गया था – एक लड़की भीगी-भागी सी। किशोर कुमार की अदाओं पर मधुबाला ऐसी रीझी कि शादी रचा ली।

न्यू ओरिएंटल फिल्म कम्पनी अपनी पहली फिल्म 'नीलकमल' की तैयारी कर रही थी। इस फिल्म की मुख्य भुमिका अभिनेत्री बेगम पारा और कमला चटर्जी निभाने वाली थी। कमला चटर्जी और केदार शर्मा ने गुपचुप शादी रचा ली थी। बीमारी के कारण जब कमला चटर्जी का अभिनय करना संभव नहीं हुआ, तब मृत्यु पूर्व उन्होंने केदार शर्मा से वचन लिया कि 'नीलकमल' में उनकी भूमिका बेबी मुमताज करेंगी। इस बीच चन्दू लाल शाह ने केदार शर्मा से पूछा कि फिल्म के कलाकार कौन हैं?। उन्होंने जवाब दिया – 'राजकपूर, बेगम पारा और मुमताज'।

चन्दूलाल शाह समझे उस जमाने की मशहूर मुमताज शांति को फिल्म में लिया गया है। बाद में जब सच्चाई सामने आई तो वह आग बबूला हो उठे। बोले – 'केदार, तुम्हारा दिमाग खराब है। बच्ची को अभिनेत्री बनाओगे?' तुमने मुझे धोखा दिया है। केदार शर्मा ने कहा – 'मेरा विश्वास करो, वह यह भूमिका निभा लेगी।'

तुम्हारा विश्वास गया भाड़ में, तुम मुझे अभी पचहत्तर हजार रूपये वापस करो' चन्दूलाल चीखे।

केदार शर्मा ने गहने और कीमती वस्तुएँ गिरवी रखकर पैसा चुकाया और कंपनी से हमेशा के लिये अलग हो गए। उन्होंने अपने दम पर 'नीलकमल' बनाई।

'नीलकमल' में बेबी मुमताज का नायिका के रूप मे अभिनय सराहा गया। मधुबाला बनने के बाद उनकी पहचान बनी फिल्म 'महल' से। 'महल' और 'नीलकमल' के बीच यानी 1946 से 1949 तक वह मेरे भगवान, इम्तिहान, चितौड़ विजय, दिल की रानी, अमर प्रेम अर्थात राधाकृष्ण, पराई आग, अपराधी, लाल दुपट्टा, सिंगार, पारस तथा नेकी और बंदी फिल्मों में नायिका बनकर आई थी।

मुमताज से मधुबाला होने के पीछे भी मतभेद है। कुछ लोगों का मानना है कि फिल्म 'इम्तिहान' के मोहन सिन्हा ने उन्हें यह नाम दिया, जबकि कुछ के अनुसार इन्दौर के कवि हरिकृष्ण प्रेमी ने उन्हें इस नाम से नवाज़ा। 'महल' में अभिनेता अशोक कुमार के साथ वह एक माली की खूबसूरत बेटी के रूप में आई जो प्रेतात्मा बनकर नायक को डराती है।

गोपीकृष्ण जैसा कट्टर ब्राह्मण मधुबाला के प्रेम जाल में नॉनवेज तक गलती से गटक गया।

अल्पशिक्षित होने के बाद भी सिर्फ तीन महीनों में मधुबाला ने फर्राटेदार बोलचाल की अंग्रेजी सीख ली थी।

शूटिंग के समय मधुबाला एक पिस्तौलधारी अंगरक्षक साथ रखती थी।

फिल्म इंडिया के सम्पादक बाबूराव पटेल ने अपनी पत्रिका में सबसे पहले 'भारतीय पर्दे की वीनस' की उपाधि से मधुबाला को संबोधित किया था।

मधुबाला के पिता अताउल्लाह खान किशोर कुमार को 'बनिया दामाद' कहते थे।

रहस्य, रोमांच और कर्णप्रिय संगीत से सजी यह फिल्म सुपरहिट रही। फिल्म का गाना – 'आएगा....आएगा.... आने वाला' ख़ासा लोकप्रिय हुआ। लता मंगेशकर की पसंद के दस गानों में यह शुमार है।

इसके बाद मधुबाला ने अपने अभिनय और सौंदर्य के ऐसे – ऐसे करिश्मे पेश किए कि केदार शर्मा से नकद 75 हजार रूपये वापस माँगने वाले चंदूलाल शाह भी मजबूर हो गए उनका लोहा मानने के लिए। यहाँ तक कि उन्होंने 'मधुबाला' नाम से फिल्म ही बना डाली।

'फागुन' में जब मधुबाला थिरकी 'इक परदेशी मेरा दिल ले गया, जाते – जाते मीठा – मीठा गम दे गया' तो थिएटर में दर्शक झूम उठे। 'मिस्टर एंड मिसेज 55' में जब उन्होंने परदे पर गाया – 'ठंडी हवा काली घटा आ ही गई झूम के' तो भारतीय दर्शक एक मीठी सुहानी बयार के नशे में होश खो बैठे।

जब देवआनंद को परदे पर रिझाया – 'अच्छा जी लो मैं हारी, चलो मान जाओ ना' तो कहीं से भी वे हारी हुई नहीं बल्कि अभिनय के सारे गढ़ जीती हुई प्रतीत हुई। 'चलती का नाम गाड़ी' में किशोर कुमार ने उन पर गाया 'एक लड़की भीगी भागी सी', तब उस नटखट और उत्तेजक गीत के साथ मधुबाला का अंग – प्रत्यंग मुस्कुराता नजर आया। 'मुगल–ए–आज़म' की अनारकली बनकर उन्होंने अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज करा लिया। अनारकली शायद लौट भी आए लेकिन मधुबाला कभी नहीं लौट सकेगी?

उस समय के सभी के हॉट हीरो अशोक कुमार के साथ आई 'महल' से मधुबाला के करियर में आकर्षक उठाव आया। फिल्म 'निशाना', 'एक साल' और 'हावड़ा ब्रिज' में इस जोड़ी का अभिनय खासा सराहा गया। सदाबहार देवआनंद और ट्रेजडी किंग दिलीप कुमार के साथ उन्हें दर्शकों ने खूब पसंद किया। दरअसल, यह मधुबाला का रेशमी व्यक्तित्व था कि वह हर हिरो के साथ अपना अभिनय इस सुघड़ता से बुनती थी कि ताना-बाना अलग करना मुश्किल हो जाता। दिलीप कुमार के साथ उनके प्रेम-प्रसंग और बाद में आई कड़वाहट की वजह से यह जोड़ी अपेक्षित संख्या में दोहराई नहीं जा सकी। फिर भी फिल्म तराना,

संगदिल, अमर और क्लासिक 'मुगल-ए-आजम' में उन्हें साथ देखना रोमांचकारी अनुभव रहा। नटखट देव के साथ मधुबाला की शरारतों ने दर्शकों का भरपूर प्यार पाया। फिल्म – मधुबाला, निराला, आराम, नादान, अरमान, कालापानी, जालीनोट और शराबी में इस जोड़ी की चंचलता और रोमांटिक गानों ने उस समय के युवाओं पर जादुई असर छोड़ा।

फिल्म 'बादल' से अभिनेता प्रेमनाथ उनकी जिंदगी में आए और 'साकी' से लौट गए। दिलीप-प्रेम-मधु का प्रेम त्रिकोण किसी फिल्मी कहानी की तरह ही रोमांच, त्याग और बिछोह के मेलोड्रमा का उदाहरण है।

अभिनेता प्रदीप कुमार के साथ राजहठ, शीरी फरहाद, यहूदी की लड़की, पुलिस, महलों के ख्वाब और पासपोर्ट में तथा भारतभूषण के साथ गेटवे ऑफ इंडिया, फागुन, कल हमारा है, बरसात की रात में मधुबाला अत्यंत आकर्षक लगीं। अभिनेता नासिर खान और शम्मीकपूर के साथ क्रमशः खजाना, नाजनीन और रेल का डिब्बा, नक़ाब तथा ब्वाय फ्रेंड में मधुबाला पूरी शोखी और शान के साथ पर्दे पर नजर आई।

अपने जीवन के आखिरी दिनों में हँसी और मस्ती के खजाने किशोर कुमार के साथ फिल्म ढाके की मलमल, चलती का नाम गाड़ी, झुमरू और हॉफ टिकट ने दर्शकों से खूब ठहाके लगवाए। चंचल-चपल किशोर ने उनके जीवनशाथी के रूप मे गंभीरता और गरिमा का परिचय दिया, वह अनुकरणीय है। फिल्म इतिहास में ऐसा दूसरा उदाहरण सुनिल दत्त-नरगिस का दिया जा सकता है। उनके जीवन की अंतिम फिल्म 'ज्वाला' सुनील दत्त के साथ थी, जिनके साथ 'इंसान जाग उठा' फिल्म वह पहले कर चुकी थी।

मधुबाला सजी-धजी, नाज़ोअंदाज वाली, ठसकदार अभिनेत्रियों के बीच एक ऐसी अभिनेत्री के रूप में उभरी जिनके पारदर्शी सौंदर्य को किसी मेकअप, किसी अदा की जरूरत नहीं थी। वह सहज भाव से जो करतीं, वही अदा हो जाती थी। मधुबाला की एक और खासियत उन्हें समकालीन अभिनेत्रियों से जुदा करती है वह है, उनकी खनकती खुली

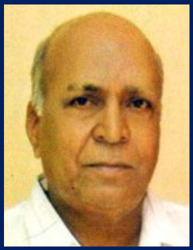

लेखक
श्रीराम ताम्रकर
एम.ए., बी.एड., विद्यावाचस्पति, विशारद,
एफ.ए. (FTII)
इन्दौर, म.प्र.

खिलखिलाहट। एक बिंदास और बेबाक हँसी, जो भारत के खेत-खलिहान में किसी भी अल्हड किशोरी के सिवा अन्य के पास नहीं मिल सकती। नूतन, नरगिस के पास यदि उस हँसी का एक अंश था भी तो सौंदर्य में वे मधुबाला से पिछड़ गई। मीनाकुमारी ट्रेजडी क्वीन की छवि में बँधती जा रही थी। मधुबाला और मीना कुमारी के जीवन और अभिनय का तुलनात्मक अध्ययन उनके बचपन से मृत्यु तक आसानी से किया जा सकता है। दोनों ने अपने करियर की शुरूआत बेबी मुमताज के रूप में की और दोनों ही सच्चे प्यार के लिये तरसती रही। मधुबाला को अंतिम दिनों में किशोर कुमार से वह मिला लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। निम्मी, गीताबाली और नलिनी जयवंत से मधुबाला की प्रतिस्पर्धा नहीं रही क्योंकि दर्शक उन्हें एक अलग छवि में पसंद कर चुके थे। यह वह दौर था जब नंबर-वन की चुहिया दौड़ आरम्भ नहीं हुई थी। यही वजह है कि मधुबाला के होते हुए भी उनकी समकालीन अभिनेत्रियों को कमतर नहीं आंका जा सकता। नरगिस की शोखी, गीता बाली का अल्हड़पन, नूतन की नमकीनियत, मीना कुमारी की नज़ाकत, सुरैया की नफासत, साधना की मासूमियत, वहीदा की सादगी और वैजन्तीमाला की थिरकन-सबका अपना अस्तित्व था।